राहुल बाबा, इनका भला कर

दलित विचारक और लेखक कंवल भारती कांग्रेस में शामिल होने जा रहे हैं। उन्होंने कांग्रेस अध्यक्ष और 'युवराज' राहुल गांधी के नाम खुला पत्र लिखा है। वे राहुल से मिलने के लिये लालायित हैं। पर राहुल की युवा बिग्रेड की एक नेता-मंत्री जतिन प्रसाद ने उनसे मुलाकात के। यह भी उनके लिये कम नहीं। वो गद् गद् हैं। हो सकता है, इस बार चुनाव में कंवल भारती को कांग्रेस से सांसदी का टिकट मिल जाए। मिल जाएगा तो जीतें या न जीतें, राजनीति के आकाश में टिमटिमाने वाले सितारों में शामिल हो ही जाएंगे। ये कुछ कम तो नहीं। राजनीति सबसे ज्यादा नाम और दाम देने वाला धंधा है। इहलोक सुधर जाएगा। लेखकी और दलित चिंतन में क्या मिलने वाला है। कांग्रेस में चुनाव लड़ने के लिये टिकट दे देगी तो जीवन सज-संवर जाएगा। आने वाले पीढ़ियां भी तर जाएंगी।

विचारहीन कांग्रेस को 'विचारकों' की जरूरत है और विचारक अगर दलित-विमर्शवादी है तो उसकी कीमत भी कुछ ज्यादा ही होगी। ऊपर से इस दलित-विमर्श में मार्क्सवाद की भी कुछ छौंक लगी हुई है। तो स्वाद ज्यादा आएगा।

कवल भारती ने दलित चिंतन के क्षेत्र में आधारभूत कार्य किया है। उनके चिंतन की स्पष्टता और प्रखरता ने, खासकर उसमें लगी मार्क्सवादी छौंक ने कई मार्क्सवादी बुद्धिजीवियों का ध्यान खींचा और मार्क्सवादी प्रकाशन केन्द्रों से उनकी कतिपय किताबें प्रकाशित हुईं। कंवल भारती मार्क्सवादी विचारकों की गोष्ठियों में शामिल होते रहे हैं। विचारहीनता के इस लंपट दौर में उनका दलित विमर्श क्रांतिकारियों में कुछ उम्मीद और अपेक्षाएं पैदा करता रहा है। पता नहीं, अब कांग्रेस में इस नक्षत्र के जाने से उनमें कैसी प्रतिक्रिया होती है। कंवल भारती सिर्फ विचारक ही नहीं, साहित्यालोचक भी हैं। इस क्षेत्र में भी इन्होंने नये मानक स्थापित किए। इनकी मार्क्सवादी/दलित विमर्शवादी दृष्टि के अनुसार प्रेमचंद और निराला जैसे महान लेखक 'ब्राह्मणवादी' हैं और इसलिए उनका कोई विशेष महत्त्व नहीं। निराला ब्राह्मण थे और उन्होंने 'चतुरी चमार' जैसी कहानी लिखी। यह एक अपराध से कम नहीं। चमार कहते या लिखते जेल होती है। यह क़ानून अंग्रेजों ने नहीं बनाया। आज़ादी मिलने के बाद नेहरू-पटेल ने भी ऐसा क़ानून नहीं बनाया। अब आकर बना। अंग्रेजों ने ऐसा कानून बनाया होता तो निराला को जेल होती। प्रेमचंद को भी। उन्होंने भी अपनी कहानियों में 'चमार' शब्द का प्रयोग किया है। कायदे से उन्हें 'हरिजन' लिखना चाहिए था। लेकिन क्या करते, तब तक महात्मा गांधी ने 'हरिजन' शब्द गढ़ा ही नहीं था। तो गूढ दलित चिंतन और मार्क्सवाद से मिली वर्ग दृष्टि ने ऐसी तुर्शी पैदा की- प्रेमचंद अप्रासंगिक तो हुए ही, दलित-विरोधी भी हो गए। जब प्रेमचंद जैसा विश्वविख्यात लेखक दलित विरोधी हो सकता है तो दलितों के खैरख्वाह और मनुष्य को मुक्ति के मार्ग पर ले जाने वालों में कंवल भारती को ही अग्रणी माना जाना चाहिए। अगर राहुल बाबा चाहें तो इस दलित चिंतक को अपना भाषण लिखने वालों की टीम में शामिल कर सकते हैं।

यह बात सभी जानते हैं कि कांग्रेस राजाओं-महाराजाओं, सामंतों-जमींदारों-श्रीमंतों की पार्टी रही है। महात्मा गांधी ने इसे जनता-जनार्दन की पार्टी बनाने की कोशिश की। उन्होंने भी चमारों और हज़ारों वर्षों से अपमान का जहर घूंट पीने वाली दलित जातियों का हरिजन नामकरण किया, पर जितना अपमानजनक चमार शब्द है, उससे जरा भी कम हरिजन नहीं। कांग्रेस ने इनका इस्तेमाल जहां आज़ादी लेने के लिये किया, वहीं बाद में वोट लेने के लिये भी करती रही। इस कांग्रेस के राज में 'हरिजनदहन' भी कम नहीं हुए, दूसरी तरफ बाबू जगजीवन राम जैसे दलित नेताओं का ब्राह्मण अवतार भी सामने आया।

कांग्रेस के इस फ़रेबी चरित्र को डॉ. आंम्बेडकर ने भली-भांति समझा था। उन्होंने भी दलित-मुक्ति के लिये राजनीतिक पार्टी बनाने के लाख जतन किए, पर सफलता नहीं मिली। थक-हार 'बुद्धम् शरणम् गच्छामि'। लेकिन वो महामानव थे, मनुष्य और विचारधारा की सीमाओं को समझने वाले। बाद में दलित मुक्ति के विचार को मूर्तियों के रूप में स्थापित करने वाले राजनीति के रंगमंच पर छा गए। सबों ने आंबेडकर को देवता के रूप में स्थापित किया, फिर स्वयं को भी भगवान और भगवती घोषित करने में जरा भी देर नहीं की। वोट बैंक की मजबूरी ने इन्हें ब्राह्म्णों का सम्मेलन तक कराने पर मजबूर कर दिया। 'बहुजन' के नारे से इन्हें 'सर्वजन' के नारे पर आना पड़ा, पर दुबारा कुर्सी नहीं मिली। हमारे देश में दलितवाद दलितों को ब्राह्मण पद पर आसीन कराने का अभियान लेकर चलता रहा है। दलितों की मुक्ति का प्रश्न दलित नेताओं और विचारकों के लिए येन-केन-प्रकारेण सत्ता-प्राप्ति का प्रश्न बनकर खड़ा हो जाता है, जैसे नारी-विमर्श देहवाद के जंगल में भटकता रह जाता है। ऐसी-ऐसी क्रांतिकारी लेखिकाएं सामने आती है, जिनके लिए नारी-मुक्ति का प्रश्न उन्मुक्त यौन संबंधों के सिवा और कुछ भी नहीं रह जाता, ठीक उसी प्रकार किसी दलित के नौकरशाह बनते या सत्तातंत्र का संचालक बनते दलित चिंतन का कार्यभार पूरा हो जाता है।

बहरहाल, यह अत्यंत ही प्रसन्नता का विषय है कि जब कांग्रेस, भाजपा और वामपंथी-समाज वादी पार्टियों से जनता त्रस्त हो चुकी है, कंवल भारती जैसे दलित विचारक-चिंतक इनमें से एक-कांग्रेस में, दलित-मुक्ति की संभावना देखते हैं।

हमें पूरी उम्मीद है कि राहुल बाबा इस दलित चिंतक की उपेक्षा हर्गिज नहीं करेंगे। इन्हें अपनी टीम के मार्गदर्शकों में शामिल करेंगे और टिकट भी देंगे। मुलायम पुत्र अखिलेश की जेल में जाकर जनाब को प्रसिद्धि तो मिल ही चुकी है। इसे कांग्रेस में शामिल हो वोटों में भुनाना चाहते हैं तो हमारी राहुल बाबा से प्रार्थना है कि इन्हें एक मौका जरूर दें। देश, यूपी और दलितों का भला हो न हो, इनका हो जाए, वही कम नहीं।

अंत में, हम सिर्फ़ यही कहना चाहेंगे- 'जय भीम' और। जय-जय राहुल

-ग़रीबदास

सपने

लोकसभा के चुनाव करीब हैं। देश में सपनों का बाज़ार खुला हैं। यह बाजार रंग-बिरंगे सपनों से अद्य है। सपनों के सौदागर देश को नापते हैं। मीडिया में हर ओर सपनों के विज्ञापन छाते हैं। सपनों के सौदागरों की समस्या है। खरीददार बाजार से नाखुश हैं। वे आशंकित हैं। हिकारत से सौदागरों को देखते हैं। जीवन की समस्याओं का समाधान चाहते हैं। हर सौदागर एक सपना थमा देता है। हर सपना गैस का गुब्बारा होता है। दूर कहीं आसमान में उड़ जाता है। डोर हाथ से छूट जाती है। बात वहीं रह जाती है। सपनों के सौदागर इस पर मुस्कराते हैं। एक-दूसरे को जन्मदिन की बधाइयां देते हैं। एक-दूसरे की लम्बी उम्र और स्वस्थ जीवन की कामना करते हैं। ठगे खरीददार जीवन पर अफ़सोस करते हैं। भूख गरीबी से लड़ते हैं। बीमारी, बेरोजगारी में जीते हैं। अभाव, आपदाओं से जूझते हैं। करोड़ों लोग शून्य में ताकते हैं। शून्य जीवन में छा जाता है। साथ संघर्ष रह जाता है। हर पल, हर क्षण जीने का संघर्ष है। अक्सर सब अकेले हैं।

सौदागरों की दुनिया दिलचस्प है। करोड़ों के वारे-न्यारे हैं। हर पल अवसर है। हर क्षण दौलत बढ़ती है। हर क्षण शोहरत बढ़ती है। हर सपना नयी योजना है। हर योजना दौलत का नया किला है। सम्राट बनने की इच्छा बलवान है। सम्राट बनने के षड्यंत्र हैं। गठबंधन हैं। सांठगांठ की बिसात है। एक सौदागर दूसरे सौदागर की पोल खोलता है। सपने का राज खोलता है। पहला, दूसरे को लतियाता है। दूसरा, पहले को आंखें दिखाता है। नूराकुश्ती का माहौल है। हार का गम है। जीत का जश्न है। 'एनीमल स्प्रिट' है। महान राष्ट्र का संगीत बजता है। वन्देमातरम्। भारत माता की जय। का उद्घोष है। नेपथ्य में अंधकार है। पतन-पतन का शोर उभरता है। सौदागरों के रक्षक हैरान हैं। पोषक परेशान है। सौदागरों के माथे पर बल हैं। बल खत्म करने को विलास है। हास परिहास है। संगीत, नृत्य है। कोकीन, शराब है। कुल जमा सौदागर मस्त हैं सूरज अस्त है।

हर देश में सौदागर हैं। हर सौदागर के सपने हैं। अमेरिकी ड्रीम, रूसी ड्रीम, चीनी ड्रीम, भारतीय ड्रीम। सपनों का झगड़ा है। जमीन का लफड़ा है। तेल का मसला है। सेना हर वक्त तैयार है। इराक अफगानिस्तान पर कब्जा है। सीरिया पर हमला है। जो देश के भीतर है वह बाहर है हर ओर हाहाकार है। घोर अंधकार है। गहरी रात है। हाथ को नहीं सूझता हाथ है। बहशी पशुओं का राज है। चीख-पुकार है। आंसुओं की धार है। हृदय जख्मी है। मन टूटा है। वक्त का संत्रास है। विक्षिप्तों की भरमार है।

दूर आसमान में तारे टिमटिमाते हैं। अपना स्थान बदलते हैं। रोशनी है। बहुत दूर है। करीब में वृक्ष है। वृक्षों में जुगनू चमकते हैं। रोशनी का अहसास दिलाते हैं। बुरे वक्त में गीत गाते हैं। क्षोभ, पीड़ा में गीत फूटते हैं। गीतों में आह्वान है। संघर्षों का ऐलान है। संगठन की मांग है। एकता की बात है। लक्ष्य का सवाल है। अतीत की याद है। सबक से भरा इतिहास है। हार की बात है। जीत का अहसास है। दुखियारों की लड़ाई है। सौदागरों की सफ़ाई है। सौदागरों का पलटवार है। जीत में बदली हार है। हार में बड़ा दर्द है। इसका बड़ा मर्म है। सौदागर का राज है। मजदूर हाथ बांधे खड़ा है। किसान परेशान है। नौजवान बेरोजगार हैं। स्त्री के साथ अन्याय है। हर ओर संशय है। हर ओर आक्रोश है। चुनावों में क्या होना है। चुनावों में क्या मिलना है। 'साथ आओ', 'साथ आओ' की पुकार है। संघर्ष जीवन का दूसरा नाम है। करने को बहुत काम है। नहीं आराम है। 'दुनिया के मज़दूरों एक हो' का नारा है। किसानों को साथ लाना है। नौजवानों को रास्ता बनाना है। स्त्रियों को आगे आना है। दलितों, शोषितों, उत्पीड़ितों को आवाज उठानी है। एक नई दुनिया बनानी है। शोषण उत्पीड़न को खत्म करना है। हर बंदी को मुक्त करना है। नई दुनिया स्वप्न नहीं हकीकत है। वक्त की जरूरत है।

-नागरिक

तुर्की-ब-तुर्की

सोनिया गांधी

''कांग्रेस बिना हल्ला मचाये काम करती है।''

नरेन्द्र मोदी

''आकाश से पाताल तक खामोशी से भ्रष्टाचार करती है कांग्रेस।''

हमारा कहना है-

- **कांग्रेस जो भ्रष्टाचार चुप रह कर करती है वहीं मोदी के बोलने के बावजूद भाजपा भी करती है। फ़र्क सिर्फ़ चुप रहने, कम बोलने, ज़्यादा बोलने और बढ़-चढ़ कर बोलने का है।**
- **सोनिया और मोदी के उपरोक्त कथन छत्तीसगढ़ की चुनावी रैली में दिये गये हैं। छत्तीसगढ़ जब से राज्य बना है वहां या तो कांग्रेस का या भाजपा का शासन रहा है। इस दौरान दोनों पार्टियों की सरकारों ने विकास के नाम पर टाटा, अडानी, जिंदल जैसे महाकार्पोरेटों को आदिवासियों की वनसम्पदा को लूटने की खुली छूट दे रखी है। लिहाज़ा राज्य के वन क्षेत्रों में नक्सली प्रभाव बढता गया है, जिसकी मार वहां की जनता को आये दिन भुगतनी पड़ती है। इस लिहाज से सोनिया की कांग्रेस के चुप रहने और मोदी की भाजपा के ललकारने में क्या फर्क हुआ?**
- **सोनिया जी आप चुपचाप रहें और मोदी जी आप बोलते रहें। पर बराय मेहरबानी अपनी 'चुप्पी' और 'गर्जना' में सिर्फ़ महाकार्पोरेटों के हितों को ही न शरीक करें। हालांकि यह आप दोनों के लिये अपने स्वभाव के विपरीत काम होगा। यह भी मत भूलिये कि जिस दिन जनता के पास सही विकल्प होगा और वह अपनी चुप्पी तोड़ेगी तो आप दोनों की बोलती बन्द कर देगी।**

कलयुग का अंत

जिस संसार की बुनियाद ही झूठ, फरेब व मक्कारी की बदौलत खड़ी हो, उससे क्या उम्मीद की जा सकती है। सच्चाई की आवाज कब बुलंद होगी और लोगों को कब इंसाफ़ मिलेगा। अधर्मी आदमी, नेता और संत बना हुआ है। नेता जनता और देश को लूट रहा है। और संत प्रवचन देकर दुनिया को मूर्ख बना रहा है। रामायण, महाभारत व गीता का उपदेश देकर समाज व देश की जनता को मूर्ख बनाता फिरता है जनता उन उपदेशों को सुनकर उस संत पर अंधी होकर विश्वास कर बैठती हैं कि वह साक्षात भगवान है। और संत महाराज इंसान की पूरी मनोवृत्ति अपनी ओर खींचकर उसके दिलो-दिमाग में अंधविश्वास बैठा देता है कि वह धर्मयोगी संत है। दुनिया को उपदेश देकर वह भला करता है। सच्चे मार्ग का रास्ता बतलाता है। उसके मार्ग पर चलने वाले मुक्ति प्रदान करते हैं और न चलने वाले को नर्क की प्राप्ति होती है। और इस प्रकार वह संत से महासंत बन जाता है।। फिर तो संत महाराज जी को गाड़ी, बंगला, आश्रम व सुरक्षा मिल जाती है। वह पूरी सुख सुविधाओं से लैस हो जाते हैं। लेकिन आम जनता को समझ में नहीं आ पाता कि संत के पास इतनी दौलत कहां से आ रही है? ये संत क्या गुल खिला रहे हैं? समाज में हर अनैतिक कार्य धर्म की आड़ में होता है। और खूब फल-फूल भी रहा है। किसी को पता नहीं कि धर्म के परदे के पीछे क्या हो रहा है।

जब किसी ईमानदार आदमी के साथ घटना होती है तब समझ में आता है कि वह धर्मयोगी नहीं हवस योगी संत है। तब जाकर आम जनता को पता चलता है कि संतजन धन व हवस का भूखा होता है। वह किसी का भला नहीं चाहता बल्कि अपना भला चाहता है। काली कमाई से अपना साम्राज्य स्थापित करना चाहता है। इस साम्रज्य के दम पर राज करना चाहता है। अपने साम्रज्य को देश-दुनिया में फैलाने की जुगत में लगा रहता है। शाहजहांपुर की नाबालिग लड़की के संग जो घटना घटी वह मात्र एक उदाहरण है। इसके जैसी न जाने कितनी घटनायें आये दिन देश भर में इन संतों के आश्रम में होती रहती हैं। फाइलों के नीचे ऐसे बहुत सारे केस दबे पड़े होंगे और उन फाइलों को दीमक चट कर गयी होगी। न्यायालय के चक्कर काट-काट कर आम इंसान चुप बैठ गया होगा। न उसकी फरियाद सुनी गयी होगी और न ही इंसाफ मिला होगा। जो गलत करता है वह सच्चाई पर परदा डाल देता है, निर्दोष को दोषी ठहरा दिया जाता है। वास्तविक दोषी न्यायालय से सजा मुक्त हो जाता है।

यही होगा 'आसाराम' जैसे 'बापू' के साथ। वह न्यायालय से छूटकर जरूर आ जायेगा। उसका फूल मालाओं से स्वागत किया जायेगा, उसके भक्त लोग उसकी जय-जयकार करेंगे। आसाराम को उसके भक्त लोग भगवान की तरह पूजते हैं। क्योंकि वे लोग आसाराम पर अंधों की तरह विश्वास करते हैं। आसाराम ने उनकी मनोवृत्ति को अपनी तरफ मोड़ लिया है, उनके दिलो-दिमाग में अपने को बैठा दिया है। जब तक इस सोच को नहीं बदला जायेगा तब तक अधर्मी का राज कायम रहेगा क्योंकि वर्षों से अंधविश्वासों का बोलबाला कायम है। इस सोच को बदलकर लोगों को विश्वास दिलाना होगा कि कर्म ही प्रधान है।

चन्द्रास्वामी का नाम भी काले-कारनामों में आया था। देश के बड़े-बड़े नेता, पूंजीपति उसके पैर पकड़कर आशीर्वाद लेते थे, उसके साथ क्या हुआ आज तक किसी को खबर तक नहीं लगी।

आम लोगों की आंखों पर परदा डालकर पाखण्डी संतों का लूट का व्यापार कायम रहता है। लोगों की इज्जत के साथ खिलवाड़ करता है क्योंकि कर्म करने पर उसे विश्वास नहीं होता है क्योंकि झूठ को सच बनाने की कला उसके पास है। आम लोग ही दिन-रात मेहनत करके अपना जीवन गुजर-बसर करते हैं। मेहनतकश अपने कर्म पर विश्वास रखता है।

-रामकुमार (वैशाली)